International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877
Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
January-March 2026
Page No: 376-384
DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606

विवाहिता व अविवाहिता छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

डॉ0 राम प्रवेश यादव[1], डॉ0 अजय कुमार यादव[2], विरेन्द्र विक्रम विश्वकर्मा[3]

[1]असि0 प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, के0एम0 विश्वविद्यालय मथुरा, इंडिया

[2]प्राचार्य, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र सिंगरामऊ, जौनपुर, इंडिया

[3]प्रवक्ता, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र सिंगरामऊ, जौनपुर, इंडिया

Corresponding Author Email: yadav31ajay07@Gmail.com

साराश–शिक्षा के वास्तविक और व्यापक अर्थ में उसके उद्देश्य भी बहुत व्यापक और बहुआयमी है जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास के साथ–साथ नैतिक, चारित्रक, व्यावसायिक तथा आध्यामिक विकास तक विस्तीर्म है। इस स्थिति में शिक्षा के सभी रुपों औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक के द्वारा उसका प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास ही होना चाहिए। शिक्षा ही वस्तुतः किसी राष्ट्र की प्रगति का मानदण्ड है। कोई भी राष्ट्र अपने दक्ष मानवीय संसाधनों द्वारा समूह बनता है। शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है जो उसे अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करती है। शिक्षा मानव सभ्यता की सर्वाधिक मूल्यवान धरोहर है। समस्त विश्व को एक सूत्र में पिरोने तथा मनुष्य और मनुष्य के बीच सद्भाव की स्थापना में शिक्षा की बड़ी–बड़ी भूमिका है जिसे नकारा नहीं जा सकता है। किसी भी क्रिया की तरह शिक्षा भी तथा व्यवहार दोनों का संश्लेस है। वास्ताविक अनुभवों की प्रक्रिया में हमारे सम्मुख अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इनके समाधान का पहला पक्ष होता है इस पर विचार करना तथा दूसरा पक्ष है उपयुक्त सिद्धान्तों का निर्माण करना। शिक्षा के विभिन्न पक्षों का तादात्म्य जीवन के इन्हीं आधारभूत प्रश्नों के समाधान खोजने का प्रयत्न करता है।

मुख्य शब्दः संवेगात्मक बुद्धि, मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, CR मूल्य इत्यादि।

I. प्रस्तावना

नयी शिक्षा नीति 2020 कहती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और 21वीं सदी के गुप्तय का रोल से सुसज्जित करना है। वास्तव में ज्ञान एक छुपा हुआ खजाना है और शिक्षा व्यक्ति के प्रतिभा साथ इसे प्राप्त करने में मदद करती है।

शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते है। अतः हमारे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण भी करते हैं। इस नैक योगदान के कारण ही भारत में शिक्षक समाज बहुत सम्मानित होता है, और प्राचीन विद्वा नही प्राचीन समाज में शिक्षक बनते थे। विद्यार्थियों को निर्धारित ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्य प्रदान करने के लिऐ समाज शिक्षक या गुरुओं को उनके जरुरत की सभी चीजें प्रदान करता था। अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता, महत्ती, पदास्थापन, सेवाशत्तों और शिक्षकों के अधिकारों की स्थिति वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिये और इसके परिणामस्वरुप शिक्षकों की गुणवत्ता और उत्साह वांछित मानकों को प्राप्त नही कर पाता है शिक्षकों के लिये उच्चतर दर्जा उनके प्रति आदर और सम्मान के भाव को पुर्नजीवित करना होगा ताकि शिक्षण व्यवसाय में बेहतर लोगों को शामिल करने हेतु उन्हें प्ररित किया जा सके। हमारे छात्रों और हमारे राष्ट्र के लिये सर्वोत्तम सम्भव भविष्य सुनिश्चित करने के लिये शिक्षकों की प्रेरणा और सशक्तीकरण की आवश्यकता है।

International Journal of Science and Social Science Research

ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal

Volume: 3 | Issue: 4

Page No: 376-384 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606 January-March 2026

शिक्षक और समुदाय के बीच सम्बन्ध बने और वह अपने समुदाय से जुड़ा रहे जिससे विद्यार्थियों को रोल मॉडल और शैक्षिक वातावरण मिल सके, इसे सुनिश्चित करने के लिये अत्यधिक शिक्षको के स्थानीय की हानिकारक व्यवस्था को रोकनी होगी। विषय के विशेषज्ञ शिक्षको को ज्यादा से ज्यादा अवसर प्रदान किया जाय। ऐसी स्थिति में शिक्षक का वैवाहिक जीवन भी प्रभावित होता है। जिसमें संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन में सहायक होती है और मूल्य उसे संतुलित रहने में सहायक होते हैं। यही आधार प्रस्तुत अध्यापक हेतु शोधकर्त्ता को जिज्ञासित किये ।

I.I. अध्ययन के औचित्य

शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है किन्तु शिक्षा के प्रमुख अंग नीव माने गये है–शिक्षक शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम इनमें से किसी एक के न होने पर इस प्रक्रिया का सम्पन्न होना सम्भव नहीं है। अतः जीवन से सम्बन्धित आवश्यकताओं की प्राप्ति एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता समस्त शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है। अध्यापक जितने कुशल तथा सुयोग्य होगे, शिक्षा व्यवस्था भी उतनी ही उत्तम होगी। शिक्षा की व्यापक परिधि के अन्तर्गत शोधकर्त्ता का मूल विषय शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापकों से सम्बन्धित है जो बी0एड्0 पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। सभी अध्यापक जन्मजात कुशल नहीं होते अतः शिक्षण में दक्षता तथा पूर्णता के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् बड़े पैमाने पर कुशल और योग्य शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए अध्यापक शिक्षा संस्थान स्थापित किए गये हैं। जहाँ भावी शिक्षकों का निर्माण किया जाता है।

स्वायत्त शिक्षा संस्था के रुप में अध्यापक शिक्षा का नियमन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (National Council of Teacher Education) द्वारा किया जा रहा है। यह संस्था प्रारम्भ में राष्ट्रीय शैक्षिक विकास और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) के अधीन कार्य कर रही थी। किन्तु अब यह भारत सरकार का स्वायत्त निकाय है जिसकी स्थापना राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् अधिनियम (1993) के अन्तर्गत 17 अगस्त, 1995 में की गयी थी। इसका उत्तरदायित्व भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानक, प्रक्रियाएँ एवं धाराओं की स्थापना और निरीक्षण करना है। विभिन्न विषयों के शिक्षण में विवाहित तथा अविवाहित छात्राध्यापकों की मनोवृत्ति में क्या अन्तर आता है, यह एक रोचक विषय रहा है। आमतौर पर यह माना जाता है कि विवाहोपरान्त व्यक्ति अधिक जिम्मेदार, व्यवहार कुशल तथा परिपक्व बनता है। इस दृष्टि से क्या विवाहित तथा अविवाहित अध्यापकों के शिक्षण व्यवहार में कोई स्पष्ट अन्तर परिलक्षित होता है? भारतीय परंपरा में विवाह को वर्णित सोलह संस्कारों में स्थान दिया गया है। जिसके पश्चात् व्यक्ति गृहस्थआश्रम में प्रविष्ट होता है तथा वह अपने घरेलू तथा नागरिक, सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करने की ओर प्रवृत्त होता है। विभिन्न शिक्षण विषयों के सन्दर्भ में इस दृष्टि से उसमें कौन–कौन सी प्रमुख व्यवहारगत विशेषताएँ उत्पन्न होती है तथा उसके कक्षा–शिक्षण व्यवहार में अविवाहित अध्यापकों की तुलना में क्या सार्थक अन्तर उपस्थित है शोध के विषय के रुप में यह अध्यापन बहुत प्रासंगिक तथा समीयोज है।

I.II. साहित्यावलोकन

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्त्ता को अपने क्षेत्र के सीमानिर्धारण करने में सहायता मिलती है।, उसे अन्य व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है तथा वह अपने शोध के उद्देश्यों को पूर्णरुपेण स्पष्ट व्यक्त कर सकता है। शोधार्थी पहले से ही सम्पन्न शोध कार्यों को दोहराने से बच सकता है तथा अपने अनुसंधान की योजना बनाने के लिए आवश्यक अर्न्तदृष्टि भी मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य के मुख्य स्रोतों में लेखक अपने कार्य को सीधे ही पुस्तकों शोध विषयक लेखों, शोध पत्रो, अपने अनुसंधानकार्य आदि के माध्यम से प्रतिवेदित करता है । प्रत्येक शोध की संरचना शोध को वह ढाचा होती है जिस पर समस्त अनुसंधान आधारित होता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण को पूर्व मान्यता यह है कि हर अनुसंधान कुछ पूर्व धारणाओ तथा पूर्व शोधों आदि से सम्बन्धित होता है । अतः पूर्व अनुसंधानो के सर्वेक्षण से हमें भावी अनुसंधान में सहायता मिलती है ।

प्रस्तुत शोध की समीक्षा शिक्षण के सन्दर्भ में सवेंगात्मक बुद्धि छात्रो के समायोजन तथा मूल्यों आदि विभिन्न पक्षों पर केन्द्रित है। इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनेकानेक अध्ययन हुए है। प्रस्तुत सर्वेक्षण इन्ही अध्ययनों का सारांश प्रस्तुत करता है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने अनेक स्रोतों से सूचना एकत्र की है। जिसके आधार पर प्रस्तुत सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा वर्णित है।

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
Page No: 376-384 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606 January-March 2026

शर्मा व अन्य (2010): ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य निर्णय क्षमता का अध्ययन में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक व सामाजिक मूल्य निर्णय उच्च पायी गयी जबकि शैक्षिक राष्ट्रीय व आर्थिक मूल्य निर्णय क्षमता अपेक्षाकृत कम पायी गयी। बालकों व बालिकाओं में नैतिक मूल्य निर्णय क्षमता समान पायी गयी अर्थात् उनमें सार्थक अन्तर नही है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयी। बालिकाओं में सामाजिक मूल्य निर्णय क्षमता बालकों से अधिक पायी गयी अर्थात् सार्थक अन्तर है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। बालकों व बालिकाओं में शैक्षिक मूल्य निर्णय क्षमता समान पायी गयी अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयी। बालकों व बालिकाओं में राष्ट्रीय मूल्य निर्णय क्षमता समान पायी गयी अर्थात् उसमें सार्थक अन्तर नहीं है; अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयी। बालकों में आर्थिक मूल्य निर्णय क्षमता बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पायी गयी अर्थात् बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पायी गयी अर्थात् उनमें सार्थक अन्तर है; अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

यादव, कमलेश (2010): ने अपने अध्ययन में विकलांग बच्चों के व्यक्तित्व–समायोजन में उनके माता–पिता एवं अभिभावकों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इसलिए अभिभावकों को अपने विकलांग बच्चों के व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास हेतु विशेष प्रयास करना चाहिए। इसके लिए इन बच्चों का संवेगात्मक विकास, शिक्षा, रोजगार एवं सामाजिक विकास की आवश्यकताओं को समझकर आवश्यक कौशलों का विकास करना अनिवार्य हैं। विकलांग बच्चों को शिक्षा एवं पुर्नवास के लिए बने कानूनों एवं अधिकारी की सफलता अभिभावकों की जागरूकता पर निर्भर करती हैं। अतः अभिभावकों का यह उत्तरदायित्व है कि अपने विकलांग बच्चे के आवश्यकताओं को समझें और उन्हें अपने व्यक्तित्व का विकास करने में उनकी सहायता करे ताकि वे कुशल एवं आत्मनिर्भर नागरिक की भॉति समायोजित जीवन व्यतीत करते हुए राष्ट्र को अपना अधिकतम योगदान दे सकें।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् उसे सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। क्योंकि बिना सुव्यवस्थित किये उस साहित्य सर्वेक्षण का कोई महत्व नहीं होता है। और न ही उससे कोई लाभ प्राप्त होगा। अतः साहित्य को व्यवस्थित करना एक कला है। अतः हर सर्वेक्षण की एक स्पष्ट व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक सर्वेक्षण प्रकरण का ऐतिहासिक विकास देता है, एवं इसका हाल का स्तर एक साक्ष्य प्रस्तुत करते है तथा यह दिखलाते है कि किस प्रकार प्रस्तावित अध्ययन विचारणीय विषय है तथा किस प्रकार दूसरे पहलू को समझने में सहायता करेगा यद्यपि कोई भी विषय सभी दृष्टिकोण से सर्वोत्तम नहीं होता है। सर्वेक्षण हमेशा चयनात्मक, सुव्यवस्थित तथा समस्या से स्पष्ट रुप से सम्बन्धित होना चाहिए।

अतः सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किसी अनुसंधानकर्त्ता की वास्तविक योजना तथा उसके बाद कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण पूर्वाक्षेपित वस्तु है। सम्बन्धित साहित्य पूर्व के अनुसंधान के लेखों का सारांश प्रस्तुत करता है। प्रभावशाली अनुसंधान अतीत के ज्ञान पर निर्भर होता है। यह पुनरावृत्ति को समाप्त करता है। अध्ययनों के उदाहरणों द्वारा जो काफी सहमति दर्शाते हैं तथा विपरीत निष्कर्ष भी होते हैं। यह अनुसंधान हेतु एक पृष्ठिभूमि प्रदान करता है। व्यवस्थिति सर्वेक्षण वर्तमान ज्ञान को तेज करने और समझ को परिभाषित करने में सहायता करता है। यह क्षेत्र में अध्ययनों के विषय में सूचना प्राप्त करने में सहायता करता है। अनावश्यक आवृत्ति से रक्षा करता है। अनुसंधान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में मार्गदर्शन करता है।

गोलमैन (1995);

1. **आत्म जागरुकता–** निर्णयों को निर्देशित करने के लिये आंत की भावनाओं का उपयोग करते हुए किसी की भावनाओं को पढ़ने और उनके प्रभाव को पहचानने की क्षमता।
2. **स्व प्रबन्धन–** इसमें किसी की भावनाओं और आवेगों को नियंत्रित करना और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना शामिल है।
3. **सामाजिक जागरुकता–** सामाजिक नेटवर्क को समझते हुये दूसरे की भावनाओं को समझने, समझाने और प्रतिक्रिया करने की क्षमता।
4. **समय प्रबन्धन–** समय का प्रबन्धन करते हुए, दुसरों को प्रेरित करने, प्रभावित करने और विकसित करने की क्षमता।

याटेस, जे0 एम0 (1999);

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
Page No: 376-384 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606 January-March 2026

''ने ''द रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड हेल्थ हैबिट्स ऑफ हेल्थ एजूकेशनल स्टेडेण्ट्स'' पर अध्ययन किया। पुरुषों एवं महिलाओं के संवेगाात्मक बुद्धि और स्वास्थ्य आदतों के बीच सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए संवेगात्मक लब्धि सूची, संवेगात्मक बुद्धि सर्वे (इ0आई0पी0एस0) तथा स्वास्थ्य आदत सर्वे (एच0एच0एस0) का प्रयोग किया गया। परिणाम यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य शिक्षा आयु में, स्वास्थ्य आदतों तथा संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध होता है।''

क्लेन्स डी0आर0 एण्ड वेयरमैन (2000);

''ने उसे छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि तथा आन्तरिक व्यक्तिगत दक्षता के मूल्यांकन के लिए एक अध्ययन किया जिनका नामांकन 'आन्तरिक व्यक्तिगत व्यवहार द्वारा संवेगात्मक बुद्धि तथा आन्तरिक व्यक्तिगत दक्षता को बढ़ाना' नामक पाठ्यक्रम में था जो ट्वेण्टी जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी के ''द साइकोलॉजी ऑफ इण्टरपर्सनल बिहैवियर'' में अण्डर ग्रेजुएट के लिए नामांकित थे। परीक्षण के लिए उसने बार–आन का ई0क्यू0–आई तथा आन्तरिक व्यक्तिगत दक्षता प्रश्नावली (आई0सी0क्यू0) का प्रयोग पाठ्यक्रम के शुरुवात और अन्त में किया। तुलना के लिए नियंत्रित समूह के 9 व्यक्तियों ने ई0क्यू0आई को तथा 6 व्यक्तियों ने आई0सी0क्यू0 को पूरा किया। परिणाम स्वरुप पाया गया कि इण्टरपर्सनल बिहैवियर कोर्स का संवेगात्मक बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जबकि प्रयोग पर आई0सी0क्यू0 स्कोर में पूर्व परीक्षण की तुलना में बाद के परीक्षण में सुधार हुआ।''

एस0आर0हेनिंग (2001);

''ने ''द रिलेशनशिप बिटवीन सोसियल एण्ड इमोशनल इंटेलीजेंस इन चिल्ड्रेन'' पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों में सामाजिक और संवेगात्मक बुद्धि के बीच सम्बन्ध का मापन करना था प्रयोज्यों की आयु 9–12 वर्ष तथा संख्या 59 थी। छात्रों ने सामाजिक दक्षता के मापन हेतु सोसियल स्किल्स रेटिंग सिस्टम्स स्टेडेन्ट्स (एस0एस0आर0एस0) तथा ई0क्यू0–आई0 का यूथ संस्करण को पूरा किया। अभिभावकों ने एस0एस0आर0एस0एस0 के अभिभावक संस्करण को पूरा किया परिणाम स्वरुप पाया गया कि–ई0आई0क्यू0 का यूथ संस्करण का एस0एस0आर0एस0 के स्टूडेन्ट संस्करण में उच्च सहसम्बन्ध (0.73) था और अभिभावक संस्करण के साथ सहसम्बन्ध (0.59) था।''

मेयर पी.डी. (2002);

''भावनात्मक बुद्धि की शोध आधारित अवधारणा की जांच करता है। इस अध्याय में चर्चा किये गये विषयों में निम्नलिखित शामिल है। मन की त्रयी, व्यक्तित्व के अन्य भाग, भावनात्मक लक्षण, संज्ञानात्मक लक्षण, सूचना के रुप में भावना, भावनात्मक धारणा, भावनात्मक एकीकरण, भावना को समझना, भावनाओं का प्रबन्धन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को क्षमता के रुप मापना, मल्टीफैक्टर इमोशनल इन्टेलीजेंस का विवरण, फलांकन, निष्कर्ष साथ ही यह निष्कर्ष निकाला गया कि अनुभूति और प्रभाव के क्षेत्र नें भावनात्मक बुद्धि के एक नये सिद्धान्त के लिये कुछ आधार प्रदान किये है।''

II. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि ''विवाहिता तथा अविवाहिता पुरुष तथा महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण विषय के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।''

III. शोध अध्ययन की परिकल्पना

उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गई थी कि ''विवाहिता व अविवाहिता छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।''

IV. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित घटनाओं का विशलेषणात्मक विवरण होता है इसकी सर्वेक्षण विधि के तहत आंकड़ों का संकलन करते हुए निरीक्षण किया जाता है। जिसमें आंकड़ों की सहायता से वर्तमान घटनाओं पर

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
Page No: 376-384 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606 January-March 2026

प्रकाश डाला जाता है। सर्वेक्षण का इंगलिश रूपान्तर Survey दो शब्दों Sur+vey से मिलकर बना है। मूल रुप से, Sur (Sor) तथा very (veeir) पर आधारित है, जबकि Sor का अर्थ over तथा veeir का अर्थ to look होता है। इस प्रकार Survey का सम्मिलित मूल अर्थ 'ऊपर से देखना' अवलोकन अथवा अन्वेषण होता है। शब्द कोष के अनुसार भी सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण होता है, जिसका उद्देश्य एक क्षेंत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है, जैसे स्कूलों का सर्वेक्षण।

IV.I. समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि समस्त बी0एड्0 प्रशिक्षण संस्थानाओं के छात्राध्यापक थे। समष्टि की विशेषतायें निम्नलिखित है। समष्टि परिमित तथा अपरिमित दो प्रकार की होती है। जिसमें प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि परिमित प्रकार की है क्योंकि छात्राध्यापक की संख्या सीमित होती है। प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि समांगी प्रकार की है क्योंकि बी0एड्0 प्रशिक्षण संस्थानाओं के छात्राध्यापक का चयन की योग्यता का मानक एक ही होता है। किसी अध्ययन की वह सम्पूर्ण ईकाई समष्टि कहलाती है। जिस पर शोध कार्य आधारित होता है।

IV.II. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श का आकार 300 होगा। किसी बड़ी राशि में से चुनी हुई एक छाटी सी मात्रा को प्रतिदर्श या नमूना है। यह माना जाता है कि प्रतिदर्श के सांख्यिकीय गुण पूरी राशि के सांख्यिकीय गुणों का प्रतिनिधित्व करते है।

IV.III. न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा समय धन के अभाव के कारण आगमनात्मक प्रविधि अपनाते हुए समष्टि से एक छोटा समूह अध्ययन हेतु चयनित किया जाता है। जिसे न्यादर्श कहते है। न्यादर्श पूरी समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन में गाजीपुर जनपद के यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा कुल तीन सौ छात्राध्यापकों का चयन किया गया था जिनके वितरण का आधार क्षेत्र, लिंग, विषय तथा वित्तपोषण था। अनुसंधान में प्रायः प्रचलित विधि का प्रयोग सम्भव नही होता, क्योंकि इस विधि के द्वारा अध्ययन धन, समय व सुविधा के दृष्टिकोण से सापेक्षिकतः अत्याधिक खर्चीला व जटिल होता है। इसके विपरीत, व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से अप्रसचलिक विधि द्वारा अध्ययन पर्याप्त मात्रा में सुगम, सरल, अल्प–व्ययी तथा शुद्ध रहता है। अप्राचलिक विधि के अध्ययन का आधार प्रतिदर्श होता है।

प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिलम्ब रहता है। पी0 वी0 यंग के शब्दों में एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु–चित्र होता है।

यदि समष्टि का स्वरुप सजातीय रहता है, तब प्रतिदर्श के चयन में विशेष कठिनाई नहीं होतीं, परन्तु जब समष्टि का स्वरुप विषम जातीय रहता है, तब प्रतिदर्श की इकाईयों के चयन के लिए प्रतिचयन प्रक्रिया का उपयोग करना पड़ता है।

तालिका

न्यादर्श वितरण

क्र0सं0	संस्थायें	छात्राध्यापक की संख्या
1.	गुरु फूलचन्द्र महाविद्यालय सैदपुर गाजीपुर	40
2.	बी0एड्0 कालेज ककरही गाजीपुर	27
3.	समता महाविद्यालय सादात गाजीपुर	28
4.	कृष्ण सुदामा महाविद्यालय हुरुमुजपुर गाजीपुर	22
5.	पी00जी0 कालेज गाजीपुर	28

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877
Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 376-384
DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606
Volume: 3 | Issue: 4
January-March 2026

6.	मलिकपुरा कालेज गाजीपुर	26
7.	संत बुलादास कालेज गाजीपुर	34
8.	केदार फौजदार कालेज गाजीपुर	26
9.	गोपीनाथ महाविद्यालय देवकली गाजीपुर	39
10.	मॉ प्रेमा महाविद्यालय बासूचक गाजीपुर	30
योग		**300**

तालिका

वैवाहिक आधारित न्यादर्श वितरण

वर्ग	**संख्या**
वैवाहिक	150
अविवाहिक	150

तालिका

न्यादर्श का समग्र वितरण

वैवाहिक–150						अवैवाहिक–150					
पुरुष			महिला			पुरुष			महिला		
विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग
25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25
योग– 300											

IV.IV. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरण प्रयुक्त किया गये थे–

IV.V. संवेगात्मक बुद्धि मापनी

अंकुल हिंडे, संजोत पिड़े तथा उपिन्दर धार द्वारा निर्मित संवेगिक बुद्धि मापनी नामक परीक्षण का प्रयोग किया गया है जो कि +2 स्तर के छात्रों की संवेगिक बुद्धि का मापन करती है। यह मापनी हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के संस्थानों के लिये बनायी गयी है।

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877
Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
January-March 2026
Page No: 376-384
DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606

IV.VI. उपकरण का निर्माण

इस परीक्षण में कुल 34 पद है जो कि +2 स्तर व महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित जानकारी के द्वारा सांवेगिक बुद्धि का मापन करती है। प्रारम्भ में इसमें 106 पद थे जिनको 50 विशेषज्ञों के समूह जो परास्नातक थे एवं अपने क्षेत्र में 10 वर्षों से अधिक अनुभव रखते हों, को दिया गया है। इसमें से चयनित पदों को 300 लोगों पर प्रशासन किया गया। इसके बाद अन्तिम दौर पर इसमें से 34 पदों का चयन किया गया। यह प्रश्नावली पांच पदो ंके रुप में है यथा–पमर्णतया सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पर्णतया असहमत।

IV.VII. उपकरण की विश्वसनीयता

इस अध्ययन में प्रयुक्त परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध विच्छेदन विधि के अनुसार 0.88 है।

IV.VIII. उपकरण की वैधता

उपकरण की वैधता के लिए पद–विश्लेषण किया गया। पदविश्लेषण के पश्चात् उपकरण की वैधता उच्च स्तर की पायी गयी जो कि 0. 93 है। निर्णायकों एवं विशेषज्ञों के आधार पर पाया गया कि इस प्रश्नावली में चयनित पद संवेगात्मक बुद्धि सेप्रत्यक्ष रुप से सम्बन्धित है।

IV.IX. उपकरण का अंकन

अंकन की विधि बहुत सरल है। पाँच बिन्दुओं की मापनी का अंकन करता है। सर्वप्रथम प्रयोज्यों द्वारा उत्तर दिये गये प्रश्नावली को ले लिया जाता है तत्पश्चात् उनकी अनुक्रिया के अनुसार पूर्ण सहमत पर 5 अंक, सहमत पर 4,अनिश्चित पर 3, असहमत पर 2, पूर्णअसहमत पर 1 अंक प्रदान किया जाता है। अन्त में इन अंकों का योग ही उत्तरदाता के सांवेगिक बुद्धि का प्राप्तांक होता है।

V. उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण तथा व्याख्या

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि ''विवाहित तथा अविवाहित पुरुष तथा महिला छात्राध्यापकों का शिक्षण विषय के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना'' इस उद्देश्य के अध्ययन हेतु कुल छः शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी जिनका परीक्षण क्रमशः निम्नलिखित है।

VI. परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य हेतु परीक्षण के लिये शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि– ''विवाहित तथा अविवहित छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इसके परीक्षण के लिये अधोलिखित विश्लेषण तालिका बनायी गयी–

तालिका 1

वैवाहिक आधारित संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य विश्लेषण तालिका–

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी0आर0मूल्य	P
विवाहित	150	45.43	10.89	1.35	0.93	N.S. .05
अविवाहित	150	44.18	9.18			

df (298) at .05 = 1.96

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Volume: 3 | Issue: 4
Page No: 376-384 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v3i4.606 January-March 2026

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि विवाहित छात्राध्यापकों को संवेगात्मक बुद्धि की मध्यमान 45.43 और मानक विचलन 10.89 है जबकि अविवाहित छात्राध्यापकों के मध्यमान 44.18 और मानक विचलन 9.18 है जिससे अभिकलित मानकत्रुटि 1.35 तथा सी0आर0 मूल्य 0.93 है। जो df (298) के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 से कम है जिसके आधार पर बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''विवाहित तथा अविवहित छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकार हो जाती है और स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि वैवाहिकता से प्रभावित नहीं होती है। प्रस्तुत अध्ययन क विरोधी परिणाम सिंह (2021) का अध्ययन है। इसके सम्भवतः कारण है कि यह जीवन की एक प्रथा है जिसके लिये हम सांवेगिक रुप से तैयार रहते है।

VII. शोध निष्कर्ष

विश्लेषणोपरान्त प्रस्तुत अध्ययन से यह शोध निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि–

विवाहिता तथा अविवाहित छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन व मूल्यों में समानता पायी जाती है।

VIII. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन भावी अध्यापकों को आधार मानकर किया गया हैं क्योंकि भारत को यदि हम स्त्री लिंग में भारत माता कहते है तो पुल्लिंग के रुप में जगत गुरु के नाम से भी जाना जाता है। अध्यापक का पेशा बड़े त्याग व कर्तव्य निष्ठता का होता है जिसके लिये आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग विश्वविद्यालयों के सशक्त व समर्थ बनाये जाये जिससे भावी अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाय तो उनमे भारतीय मूल्य (सामाजिक, धार्मिक, ज्ञान, पर्यावरणीय तथा एक दूसरे के प्रति लगाव और एकात्मकता भाव) स्थापित हो सकें। हमारा भावी अध्यापकों की आत्मा में भारतीयता भरी हो ताकि वे अपने भारतीय समाज को भली–भाँति समझ सके औंर पोषित करने वाले बने।

नई शिक्षा–नीति 2020 कहती है कि 'भारत का ज्ञान' में आधुनिक भारत और इसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के सम्बन्ध में भारत की भविष्य की आंकाक्षाओं की स्पष्ट भावना शामिल होगी इन तत्वों को पूरे स्कूल पाठ्यक्रम में जहाँ भी प्रासंगिक हो यहाँ वैज्ञानिक तरीके से और एक सटीक रुप से शामिल किया जायेगा। विशेष रुप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान एवं सीखने के स्वदेशी और पारम्परिक तरीकों से कवर किया जायेगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि अन्जीनियरिंग, भाषा विज्ञान साहित्य, खेल के साथ–साथ शासन, राजव्यवस्था संरक्षण आदि विषयों में शामिल किया जायेगा जनजातीय एथनो आषधीय परम्पराओं वन प्रबन्धन, पारम्परिक जैविक फसल की खेती, प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराये जायेगे। भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम भी एक वैकल्पिक रुप में माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के लिये उपलब्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. **गोलमैन (1995);** ''*व्हाट इट कैन मैटर मोर दैन आई.क्यू.?* ए.आई.सी. एच. ई. ''इन्होंने संवेगात्मक बुद्धि के 04 मॉडल का जिक्र किया है।
2. **याटेस, जे0 एम0 (1999);** ''*द रिलेशनशिप बिटवीन इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड हेल्थ हैबिट्स ऑफ हेल्थ एजूकेशनल स्टेडेण्ट्स*'' डिजर्टेशन ऐब्स्ट्रैक्ट इण्टरनेशनल, 60–90 ए. 3284.
3. **क्लेन्स डी0आर0 एण्ड वेयरमैन (2000);** ''*एसेसिंग इमोशनल इंटलीजेन्स एण्ड इण्टरपर्सनल कम्पीटेंस इन स्टूडेन्ट*'' पी0–एच0डी0, जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी, अटलाण्टा, जार्जिया.
4. **एस0आर0हेनिंग (2001);** ''*द रिलेशनशिप बिटवीन सोसियल एण्ड इमोशनल इंटेलीजेंस इन चिल्ड्रेन*'' पी–एच0डी0 थीसिस, टेन्सी यूनिवर्सिटी.

5. **मेयर पी.डी. (2002);** *''भावना, बुद्धि और भावनात्मक बुद्धि जे.पी. फोर्गस(एड) में'* प्रभाव और सामाजिक अनुभूति की पुस्तिका पेज (410–431) लारेंस एर्लबौम एसोसियट्स पब्लिशर्स.
6. **पी0 क्रिक (2003);** *''इमोशनल इंटेलीजेन्स, सोसियल कम्पीटेन्स एण्ड सक्सेज इन हाईस्कूल स्टेडेन्ट्स'* पी–एच0डी0 थीसिस, वेस्टर्न केण्टयूकी यूनिवर्सिटी, बाउलिंग ग्रीन.
7. **के0डी0 पार्कर (2004);** *''इमोशनल इंटेलीजेंस, एण्ड ऐकेडमिक सक्सेस : एग्जेमाइनिंग व ट्रांजिशन फ्राम हाई स्कूल टू यूनिवर्सिटी'* रिसर्च पेपर, साइकोलॉजीकल एसोशिएशन, बैंकावार.
8. **सी0 रेकर एण्ड जे0डी0ए0 पार्कर (2005);** *''ने इमोशनल इंटेलीजेंस, मुड एण्ड प्राब्लम बिहैवियर अन चिल्ड्रेन एण्ड एडोलसेन्ट फेस्टर सेसन प्रजेण्टेड एट ए0पी0ए0 107वीं अनुएल कन्वेशन*, बोस्ट, एम0ए0.
9. **एम0 पी0 एलेन (2006);** *''इन्वेस्टीगेटिंग इंटेलीजेन्स इन चिल्ड्रेन : एक्सप्लोरिंग इट्स रिलेशनशिप टू कागनिटिव इंटेलीजेन्स'* पी–एच0डी0 डिजर्टेशन एब्स्ट्रैक्ट्स, इण्टरनेशनल 60–09, 3254.
10. **वी0 सी0 शनवाल (2007);** *''ए स्टडी ऑफ कोरिलेट्स एण्ड नर–चुरेंस ऑफ ई0आई0 इन प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन''* पी–एच0डी0 एजूकेशन, जामिया मिलिया इस्लामिया, न्यू देलही.